रामकथा का क्षेत्र व्यापक है और यह केवल साहित्यिक या रंगमंचीय परम्पराओं तक सीमित नहीं है अत: रामकथा के रंगमंच पर केवल साहित्य तथा कलाओं के विकास की पृष्ठभूमि में ही विचार नहीं किया जाना चाहिए अपितु उन आदर्शों की पृष्ठभूमि में विचार किया जाना चाहिए जिन्हें यह कथा मानव आचरण के मानदंड के तौर पर प्रस्तुत करती है। चेतन अथवा अचेतन रूप से प्रत्येक पुरुष राम की तरह वीर और लक्ष्मण की तरह बलिदानी और त्यागी तथा हनुमान की तरह शांत, तटस्थ और निष्ठावान बनना चाहता है और प्रत्येक नारी सीता की तरह पतिव्रता तथा साहसी बनना चाहती है। कहानी के पात्रों की चर्चा भारत में ही नहीं, इंडोनेशिया, थाइलैंड, कंबोडिया और बर्मा में भी घर घर होती है।

शुद्ध कलात्मक अर्थों में रामलीला अनेक रूपों में पूरे भारत भर में दिखाई देर्ती है। सबसे अधिक लोकप्रिय रूप कथा या कलाकार का है जो या तो शुद्ध कथा पाठ करता है या उसे गाकर सुनाता है। वह एक व्यावसायिक गायक कलाकार होता है जो वाचक, गायक, संगीतकार, अभिनेता सभी कुछ होता है। ऐसा माना जाता है कि इस कथा के सबसे पहले गायक और वाचक स्वयं लव और कुश थे। कथाकार निस्संदेह रंगमंच के चरित्र अभिनेता का अग्रदूत था। रामलीला के सूत्र प्राचीन लोक नाटकों में भी विद्यमान है। बंगाल के 'जात्रा' नाटक कर्नाटक के 'देशावतार' आसाम के 'अंकिया नाटक' और नेपाल-मैथिल के 'कीर्तनिया नाटक' में इस अभिनय के स्त्रोत ढूढ़े जा सकते हैं। सोलहवीं शताब्दी के भक्ति आन्दोलन से राम भक्ति के दृश्य या मंचन व्यापार को विशेष प्रश्रय मिला है। गोस्वामी जी इसके विशिष्ट प्रयोक्ता रहे है। उनका रामचरितमानस स्वयं ही एक नाटकीय महाकाव्य है आज भी अवध की रामलीला में मानस ही आधार मूल कृति रूप में प्रयुक्त होती है। उसकी चौपाइयाँ संवाद रूप में गाई जाती है।

रामलीला का प्रचलन तुलसी के परवर्ती युग में भी दिखाई देता है। कुछ कृतियाँ उल्लेखनीय हैं- (1) प्राणचन्द्र कृत 'रामायण महानाटक'

Scanned by CamScanner

रामलीला

भारतीय कला राजाओं और सामन्तों के आश्रय में पनपी है। भारतीय नाट्य कला और नाट्य साहित्य भी उच्च अभिजात वर्ग तथा शिक्षित समाज का ही प्रतिनिधित्व करता है। किन्तु इस का अभिप्राय यह भी नहीं कि निम्नवर्ग में कला का सर्वथा अभाव रहा है। नाट्य कला भी शिक्षित वर्ग से पृथक जनसमाज में प्रतिष्ठित रही। अब विद्वद्वर्ग का ध्यान इस ओर गया है और लोकगीत, लोकनृत्य के साथ लोकनाट्य भी विवेच्य तथा आस्वाद्य विषय हो गया है।

लोकनाट्य और लोकनृत्य एक ओर धार्मिक भावना की तृप्ति करते हैं तो दूसरी ओर सामाजिक मनोरंजन के साधन भी जुटाते हैं। इस आधार पर लोकनाट्यों को स्पष्ट रूप से दो भागों में विभाजित किया जा सकता है। धर्मप्रधान नाट्य और सामाजिक नाट्य। धार्मिक नाट्य में रामलीला कृष्णलीला, यात्रा नाट्य इत्यादि आते हैं और सामाजिक नाटकों में नौटंकी, नकल, स्वांग इत्यादि का समावेश होता है।

धार्मिक नाट्य में रामलीला अत्यन्त प्रसिद्ध लोकनाट्य है शरद् ऋतु के प्रारंभ में गाँव-गाँव में इसका आयोजन किया जाता है। श्री राम के जीवनादर्श को जिन भिन्न-भिन्न नाट्य रूपों में प्रदर्शित किया जाता है उसे परम्परागत अर्थों में रामलीला कहते हैं। नर रूप धारी अवतारी राम ने इस धारा पर आकर जो शील शक्ति और सौन्दर्य समुचित कार्य किए उनके नाट्य रूपों को लीला नाम से सम्बोधित किया जाता है।

रामलीला राम की ही भक्ति के समान व्यापक तथा प्राचीन है। हिमालय के गर्भ से गंगा के उद्गम का समय बता सकना जितना कठिन है उतना ही कठिन रामलीला का प्राकट्य काल बताना है। राम के भक्त तो रामलीला की इस परम्परा को अनादि कहते हैं। एक किंवदती प्रचलित है कि त्रेतायुग में जब राम पिता की आज्ञा से वन को चले गये तो अयोध्यावासी परिजन, पुरजन और प्रजाजनों ने राम के बाल चरितों का अनुकरण और अभिनय करते हुए चौदह वर्ष के विषम वियोग के दिन

समकरूणाकर नाटक' 1840 ई. गोपाल विद्दानकृत 'राभाभिषेक नाटक' 1877 ई., देवकीनन्दन त्रिपाठी लिखित 'सीताहरण' 1874 ई. रामलीला 1879 ई., दामोदर शास्त्री विरचित 'रामलीला नाटक' 1882-87 ई. तथा भवदेव कृत 'सुलोचनासति' 1885 ई. आदि कृतियाँ भी उल्लेखनीय हैं। इन सबकी अपेक्षा पं. शीतलाप्रसाद त्रिपाठी का 'जानकी मंगल' नाटक (जो 3 अप्रैल 1868 को काशी में अभिनीत हुआ) रंगमंचीय दृष्टि से प्रथम रामलीला और प्रथम हिन्दी मंचित नाटक के रूप में स्वीकार्य है।

रामलीला का रंगमंच:-

शरद ऋतु के प्रारंभ में गाँव-गाँव में इसका आयोजन किया जाता है। रामलीला का समय आने के बहुत पहले तैयारी प्रारंभ हो जाती है, चन्दा वसूल किया जाने लगता है। विभिन्न पात्रों के वस्त्राभूषण सुरक्षित रहते हैं अधिकतर उन्हीं से काम चलाया जाता है। कुछ पुराने कपड़ों को निकाल कर उनके स्थान पर नए कपड़े बनवा लिये जाते हैं। दर्शक प्राय: चारो ओर बैठते हैं और बीच में अलग-अलग मंच बना लिये जाते हैं। जिनके नाम लीलाओं के आधार पर रखे गये हैं जैसे अयोध्या सम्बन्धी जितनी भी लीलाओं का प्रदर्शन होता है उसे अयोध्या नाम दे दिया जाता है। इसी प्रकार अन्य स्थलों के नाम हैं-जनकपुर, चित्रकूट, सगरा, कबंध-मुनि-आश्रम, भारद्वाज-आश्रम, पंचवटी, शबरी-आश्रम, पंपासर और लंका आदि।

वाराणसी में नागरिक हिन्दू समाज ही सामूहिक प्रयास के तौर पर रामायण खेलता है। इसके संरक्षक आज भी स्थानीय राजा है और वाराणसी के वर्तमान महाराजा व्यक्तिगत रूप से सभी तैयारियों के निर्देश देते है और मार्गदर्शन करते हैं। यह आवश्यक नहीं कि अभिनेता अनिवार्य रूप से ब्राह्मण हों या किसी विशेष जाति से चुने हुए लोग हों। उनकी एकमात्र योग्यता यह है कि नायकों और नायिकाओं की विशेषकर राम, लक्ष्मण और सीता की भूमिकाएँ 14 वर्ष से कम आयु के किशोरों द्वारा

Scanned by CamScanner

निभाई जानी चाहिए। यह शर्त भारत की सभी लीला रूपों में समान है। वस्तुतः इसके पीछे संदेश यही है कि भोलापन, कौमार्य और ब्रह्मचर्य किसी भी अभिनेता, नर्तक, अभिनेत्री नर्तकी के लिए, ईश्वर के चरित्र को प्रस्तुत करने के लिए अनिवार्य अपेक्षाएँ हैं। अन्य पात्रों जैसे संगीतकारों, नर्तकों, उद्घोषकों और वाचकों आदि का चुनाव उनकी कुशलता के आधार पर किया जाता है। समय के साथ-साथ कुछ लोगों ने विशेष पात्रों की भूमिकाओं में विशिष्ठता प्राप्त करनी प्रारंभ कर दी। इस प्रकार का विशेष समुदाय का रावण या विशेष समुदाय का विभीषण या दशरथ होता है। किशारों के बड़े होने के साथ-साथ राम, सीता और लक्ष्मण की भूमिकाओं को हर दो-तीन वर्षों में बदला जाता है। ये पात्र व्यावसायिक न होकर अनिवार्य रूप से शौकिया होते हैं।

दशहरा के दस दिन पहले मुख्य अभिनेता के शरीर पर विलेपन किया जाता है और उसे सजाया जाता है और अब उसके माथे पर तिलक लगा कर अंतिम अनुष्ठान पूरा किया जाता है तो उसे भगवान अभिषिक्त किया जाता है। जितने समय उस पर यह हल्का और परिष्कृत प्रसाधन रहता है उससे यह अपेक्षा की जाती है कि वह स्वयं को मनुष्य मात्र से देवता के अवतार रूप में परिणत कर ले। संभवतः उसका प्रसाधन ऐसा करने में सहायक होता है क्योंकि आटे की झीनी-सी परत रहती है और उस पर कटी हुई पन्नी की चित्रकारी होती है जो उसे उस देवता के चित्रों की याद दिलाती है। उसकी भवें व आँखें मूर्तिवत हो जाती है। अभिषेक सम्बन्धी अनुष्ठान पूरे हो जाने पर अभिषिक्त अभिनेता को वास्तविक प्रदर्शन से काफी पहले अपने को कड़े अनुशासन में ढाल लेना पड़ता है।

रामलीला का प्रारंभ पूर्वरंग से किया जाता है। पूर्वरंग की एक निश्चित विधि है जिसमें स्थान-भेद से प्रकार-भेद भी देखा जाता है। कहीं यह लीला भगवान के मुकुटों के पूजन से प्रारंभ होती है और कहीं इसी प्रकार के कर्मकाण्डों से। डॉ. अज्ञात के अनुसार लीला अभिनय करने के पूर्व भगवान राम को प्रसाद चढ़ाया जाता है और हनुमान जी का ध्वज फहराया जाता है जिससे लीला निर्विघ्न रूप से समाप्त हो। पूर्वरंग का यह परम्परागत रूप कहीं परदे के अन्दर ही होता है और कहीं परदा खोलकर दर्शकों के समक्ष। पूर्वरंग की यह प्रथा भरतकालीन है अस्तु इसी

Scanned by CamScanner

से लीला का आरंभ किया जाता है।

रामलीला में वेशभूषा और रंगसज्जा के लिए विशेष परिश्रम नहीं किया जाता। काजल, चन्दन, सुरमा, गेरू, राख, खड़िया, रोली, पाउडर, बने हुए चेहरे मोहरे, पन्नियों के चमकाये मुकुट, लकड़ी के अस्त्र-शस्त्र दाड़ी मूछें, गेरूयाँ कपड़े, कमण्डल, हनुमान और बन्दरों के लिए लचलची पूछें, राम-लक्ष्मण के लिए जरी के अंगोछे, धनुष-बाण आदि सामग्री पर्याप्त है।

रामलीला में जुलूस और झांकियों की भी विशेषता रहती है। प्राय: अंतिम दिन जुलूस में झांकियाँ सजकर निकलती है जिसमें ऐतिहासिक वीर पुरुषों पौराणिक कथा नायकों इत्यादि की अनेक झांकियाँ प्रस्तुत की जाती है। किसी-किसी गाँव में पूरी रामलीला नहीं खेली जाती, किन्तु दशहरा का उत्सव मना लिया जाता है। कहीं दो दिन और कहीं एक दिन का मेला लग जाता है। उसमें पूरी रामायण तो नहीं किन्तु राम रावण युद्ध का अभिनय अवश्य कर लिया जाता है।

रामलीला केवल गाँव में ही नहीं शहरों में भी खेली जाती है इसके लिए बड़ी-बड़ी कम्पनियाँ कायम है जिनके पास चलते फिरते रंगमंच होते हैं। ये कम्पनियाँ आर्डर बुक करती है और विभिन्न स्थानों पर जाकर रामलीला को अभिनीत करती है। कहीं-कहीं इसके लिए स्थायी रंगमंच भी बन गये हैं जिन पर समय-समय पर रामलीला के अतिरिक्त अन्य नाटक भी खेले जाते हैं। दिल्ली की रामलीला एक राष्ट्रीय पर्व जैसा बन गई है। भारतीय कला केन्द्र की ओर से प्रतिवर्ष एक अत्यन्त उच्च कोटि की रामलीला का अभिनय फिरोजशाह कोटला ग्राउण्ड में प्रस्तुत किया जाता है और दिल्ली क्लॉथ मिल्स की ओर से घूमते हुए रंगमंच पर रामलीला का प्रस्तुत किया जाना इस दिशा की महत्वपूर्ण उपलब्धि है। दर्शक मंच के चारों ओर बैठ जाते हैं। मंच पर रामलीला प्रस्तुत की जाती है। यह मंच गोल दायरे में घूमता जाता है। वस्तुत: रामलीला खुले रंगमंच का लोकनाट्य ही है। स्पष्ट है कि रामलीला की नाट्य परम्परा बड़ी समृद्ध है। भारतीय जनमानस का इससे रागात्मक संबंध है।

Scanned by CamScanner